ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR * Dist.Nanded *

INDEX

Sr. No	Author Name	Paper Name	Page No
201	प्रा. डॉ. किशनकेंद्रे	महात्मा गांधीजीचे ग्रामीण स्वराज्य – एक ऐतिहासिक अवलोकण	996
202	डॉ. अर्चना बी. जैन	पर्यावरण पर डेयरी विकास का प्रभाव	1000
203	Dr. Ajit Ashte	E-Technology For Agriculture Development	1007
204	कमलकिशोर शिवाजी तोडे	ग्रामीण विकास आणि समकालीन आव्हाने	1010
205	डॉ.केशव पाटील	ग्रामीण विकासात मराठी साहित्याची भूमिका	1016
206	**प्रा. डॉ. भडके डि. डि.**	**शालेय खेळाडुसाठी सर्वात सुंदर व्यायाम म्हणजे मलखांब**	1020
207	डॉ. व्यास सी. पी.	प्राचीन धाराशिव लेणी : ऐतिहासिक व पर्यटकीय संदर्भ	1024
208	Dr. D. N. More And A. C. Thorat	Dark Image Of Rural India In Aravind Adiga's *The White Tiger*	1027
209	Dr. Kotgire Manisha Arvind	Overview On Sustainable Agriculture	1031
210	प्रा. तेलंगे एन.एन.	जलपुनर्भरण काळाची गरज	1036
211	प्रा. पवार बळीराम वसंतराव	महाराष्ट्रातील ग्रामीण विकास	1039
212	Dr. P. D. Suryawanshi	Rural Development In India : Efforts & Problems	1042
213	Dr. Rajeshwar V. Kirtankar	Study Of Impact Of E-Commerce Onretail Sector In India	1047
214	Abdul Sajid Kazi And Dr. Mahima Gautam	Literature, History And Culture: Peeping In Salman Rushdie's *Midnight's Children*	1050
215	डॉ. विजया साखरे	ग्रामीण पर्यटनातुन आर्थिक समृध्दी	1054
216	डॉ.शारदा गोविंदराव बंडे	ग्रामीण पर्यटनात आदर्श ग्राम पर्यटन – राळेगणसिध्दी	1057
217	डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव व डॉ. संतोष विजय येरावार	उषा प्रियंवदा की कहानियों में ग्रामीण मध्यवर्गीय जीवन	1060

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

उषा प्रियंवदा की कहानियों में ग्रामीण मध्यवर्गीय जीवन

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी महाविद्यालय, सिडको, नांदेड
व
डॉ. संतोष विजय येरावार
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, देगलुर कॉलेज, देगलुर, जि. नांदेड

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

साहित्य और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू माने जाते हैं। वे परस्पर अनुस्यूत हैं। समूह बनाकर रहने की प्रवृत्ति सभी प्राणिमात्र में समान दिखाई देती है। किन्तु मनुष्य में तथा अन्य प्राणियों में पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। अन्य प्राणी किसी विशिष्ट उद्देश्य जैसे– शिकार एवं भोज्य प्राप्ति के लिए समूह बनाकर रहते हैं, तो मनुष्य अपने सर्वांगीण विकास हेतु समूह में रहता है। समाज में ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव है। मनुष्य ने परस्पर विचार–विनिमय के लिए भाषा का निर्माण किया। अत: कहा जा सकता है कि, मनुष्य ने जबसे अभिव्यक्ति के लिए भाषा साधन को अपनाया तब से साहित्य और समाज का सम्बन्ध प्रस्थापित हुआ। भारतीय समाज पर यदि दृष्टिपात करे तो समाज विभाजन की प्रवृत्ति प्राचीन काल से ही दिखाई देती है। प्राचीन काल में समस्त भारतीय समाज को वर्णव्यवस्था के आधार पर चार विभागों में विभाजित किया गया। किन्तु धीरे–धीरे वर्णव्यवस्था के बन्धन अत्यन्त कठिन बनते गए, परिणामस्वरूप सामाजिक विद्रोह की भावना उफनकर सामने आने लगी और आधुनिक काल तक आते–आते आधुनिक विचारों ने वर्णव्यवस्था के बन्धनों को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। परिणाम यह हुआ कि वर्णव्यवस्था के स्थान पर आधुनिक काल में खास तौर पर औद्योगिक क्रान्ति के उपरान्त वर्गव्यवस्था ने जन्म लिया और समस्त समाज तीन वर्ग में विभाजित हो गया जैसे– उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग।

अनुभूति की तीव्र अभिव्यक्ति 'साहित्य' कहलाता है। साहित्यकार समाज में रहकर ही अनुभूतियाँ ग्रहण करता है और उन्हीं अनुभूतियों को अत्यन्त तल्खी के साथ साहित्य में अभिव्यक्त करता है। साहित्य समाज का सच्चा पथप्रदर्शक, दिग्दर्शक, निर्देशक तथा हितैषी होता है। जिस समाज में श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण होता है वह समाज निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। "साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है।"[१] हिंदी कथा–साहित्य पर यदि दृष्टिपात करे तो एक बात स्पष्ट है कि, प्रेमचन्द के आगमन से ही हिंदी कथा–साहित्य में उथल–पुथल निर्माण हो गई। प्रेमचन्द ने ही सच्चे अर्थों में हिंदी कथा–साहित्य को सामाजिक धरातल पर लाकर छोड़ दिया, कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रेमचन्द के पश्चात् हिंदी कथा–साहित्य में एक बाढ़–सी आ गई। अधिकांश रचनाकार

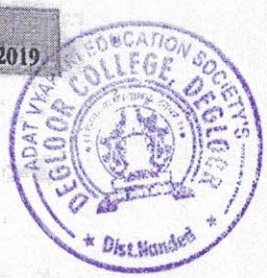

उषा प्रियंवदा की कहानियों में ग्रामीण मध्यवर्गीय जीवन

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी महाविद्यालय, सिडको, नांदेड

व

डॉ. संतोष विजय येरावार

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, देगलुर कॉलेज, देगलुर, जि. नांदेड

साहित्य और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू माने जाते हैं। वे परस्पर अनुस्यूत हैं। समूह बनाकर रहने की प्रवृत्ति सभी प्राणिमात्र में समान दिखाई देती है। किन्तु मनुष्य में तथा अन्य प्राणियों में पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। अन्य प्राणी किसी विशिष्ट उद्देश्य जैसे– शिकार एवं भोज्य प्राप्ति के लिए समूह बनाकर रहते हैं, तो मनुष्य अपने सर्वांगीण विकास हेतु समूह में रहता है। समाज में ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव है। मनुष्य ने परस्पर विचार–विनिमय के लिए भाषा का निर्माण किया। अत: कहा जा सकता है कि, मनुष्य ने जबसे अभिव्यक्ति के लिए भाषा साधन को अपनाया तब से साहित्य और समाज का सम्बन्ध प्रस्थापित हुआ। भारतीय समाज पर यदि दृष्टिपात करे तो समाज विभाजन की प्रवृत्ति प्राचीन काल से ही दिखाई देती है। प्राचीन काल में समस्त भारतीय समाज को वर्णव्यवस्था के आधार पर चार विभागों में विभाजित किया गया। किन्तु धीरे–धीरे वर्णव्यवस्था के बन्धन अत्यन्त कठिन बनते गए, परिणामस्वरूप सामाजिक विद्रोह की भावना उफनकर सामने आने लगी और आधुनिक काल तक आते–आते आधुनिक विचारों ने वर्णव्यवस्था के बन्धनों को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। परिणाम यह हुआ कि वर्णव्यवस्था के स्थान पर आधुनिक काल में खास तौर पर औद्योगिक क्रान्ति के उपरान्त वर्गव्यवस्था ने जन्म लिया और समस्त समाज तीन वर्ग में विभाजित हो गया जैसे– उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग।

अनुभूति की तीव्र अभिव्यक्ति 'साहित्य' कहलाता है। साहित्यकार समाज में रहकर ही अनुभूतियाँ ग्रहण करता है और उन्हीं अनुभूतियों को अत्यन्त तल्खी के साथ साहित्य में अभिव्यक्त करता है। साहित्य समाज का सच्चा पथप्रदर्शक, दिग्दर्शक, निर्देशक तथा हितैषी होता है। जिस समाज में श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण होता है वह समाज निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। "साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है।"[१] हिंदी कथा–साहित्य पर यदि दृष्टिपात करे तो एक बात स्पष्ट है कि, प्रेमचन्द के आगमन से ही हिंदी कथा–साहित्य में उथल–पुथल निर्माण हो गई। प्रेमचन्द ने ही सच्चे अर्थों में हिंदी कथा–साहित्य को सामाजिक धरातल पर लाकर छोड़ दिया, कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रेमचन्द के पश्चात् हिंदी कथा–साहित्य में एक बाढ़–सी आ गई। अधिकांश रचनाकार

मध्यवर्ग से सम्बन्धित रहे। परिणामस्वरूप उन्होंने स्वानुभूत सत्य को खुलकर साहित्य में अभिव्यक्त किया। उनमें उषा प्रियंवदा का योगदान विशेष है।

प्रेमचंदोत्तर युग में हिंदी कहानी में स्वतंत्र भारत के स्वरूप को बृहद रूप से चित्रित करने का प्रयास हुआ है। एक ओर शैलेश मटियानी, फनीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, मार्कंडेय तथा राजेंद्र अवस्थी जैसे कहानीकारों ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन तथा ग्रामीण परिवेश की अभिव्यक्ति की है, तो दूसरी ओर महानगरीय जीवन का भी पर्याप्त चित्रण इस युग की कहानियों में मिलता है। उषा प्रियंवदा की अधिकतर कहानियाँ महानगरीय जीवन को प्रस्तुत करती है। किंतु महानगरीय जीवन के साथ साथ ग्रामीण जीवन पर भी उषा प्रियंवदा ने अपनी कलम चलाई है।

भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कारों में विवाह को चौदहवें संस्कार के रूप में ग्रहण किया गया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक विवाह विषयक भिन्न–भिन्न प्रथाएँ, परंपराएँ भारतीय समाज में प्रचलित हैं। मध्यवर्ग सच्चे अर्थों में प्रथाओं, परंपराओं का वाहक होता है। मध्यवर्ग में विवाह किसी उत्सव से कम नहीं है। 'मकान बांधना तथा विवाह करना जीवन में एक बार होता है' इस प्रकार की कहावत मध्यवर्ग में प्रचलित है।

ग्रामीण जीवन में विवाह के समय लड़की देखने की तथा पसंद करने की प्रथा आज भी सर्वत्र व्याप्त दिखाई देती है। 'मेनका, रंभा, उर्वशी' कहानी में मध्यवर्गीय परिवार के वकील बाबू अपने लड़के के लिए कुसुमी को देखने अपने परिवारसहित आते हैं। कहानी की परशू की चाची के पास जब किशोर चाय के बर्तन माँगने के लिए आता है, तब चाची पूछती है कौन आया है? किशोर बताता है, "जिज्जी को देखने आए हैं।"[२] चारपाई पर बैठे चाचा की उत्सुकता बढ़ती है, वह पूछते हैं, "कितने लोग हैं?"[३] किशोर कहता है, "पाँच – माँ, बाप, दो बहनें और एक भावज।"[४] कहानी में मध्यवर्गीय परशू की चाची के तीनों बेटे जब बड़े हुए तो उन्हें देखकर चाची को गर्व महसूस होता है। अपने बेटों के लिए उसे मेनका, रंभा, उर्वशी जैसी बहू की तलाश है। "बहू आएगी तो अप्सरा जैसी, और उसकी खोज में चाची जमीन आसमान एक कर देगी। जान–पहचान, मुहल्ले, टोले, नाते–रिश्तेदार सभी को यह बात जता दी गई।"[५]

विवाह जैसे शुभ अवसर पर भारतीय ग्रामीण समाज में अनेक रूढ़ियों–प्रथाओं का प्रचलन रहा है। उन परंपराओं में एक कुप्रथा दहेज की पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। वैसे दहेज प्रथा भारतीय समाज के लिए नूतन नहीं है। सदैव यह प्रथा किसी न किसी रूप में समाज में प्रचलित रही है। माता–पिता के अर्थाभाव के कारण लड़की की शादी नहीं हो पाती है। 'फिर वसंत आया' कहानी के विनायक बाबू मध्यवर्गीय परिवार के हैं। पिताजी मामूली आदमी हैं। अब रिटायर हो चुके हैं। दो बहने हैं। दिखने में साधारण और पढ़ी–लिखी भी

College, Degloor, Dist. Nanded

नहीं। विनायक बाबू कहते हैं, "खूबसूरत भी नहीं है। न हमारे पास बहुत रुपया ही है। इसलिए शादी रूकी है।"[६]

ग्रामीण भारतीय समाज पर जातीय व्यवस्था का प्रभाव रहा है। एक ओर स्वातंत्रोत्तर काल में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में भारत की अपनी विशेष पहचान है। समता, स्वातंत्र तथा बंधुता जैसे मूल्यों को स्वीकार किया गया है। प्रत्युत हम देखते हैं कि जातीय बंधनों से भारतीय ग्रामीण समाज आज भी मुक्त नहीं हो पाया है। शिक्षित युवक–युवतियों में मुक्त विचारभावों में जातीय बंधनों को तोड़ने का प्रयास हुआ है, परन्तु सामाजिक मर्यादा के आगे वे भी विवश हो रहे हैं। समाज में रोटी–बेटी का व्यवहार आज भी प्रचलित हैं। 'अकेली राह' कहानी की गौरी पढ़ी–लिखी एवं कामकाजी नारी है। रहमान नामक दूसरे जाति के व्यक्ति से प्रेम करती है, परन्तु जातीय व्यवस्था उसे जकड़ लेती है। "भले ही वह पढ़–लिखकर स्वतंत्र हो गई हो, पर इतना बड़ा कदम उठाते हुए उसे भय लगता था।"[७]

ग्रामीण अनपढ़ लोगों में यह जातीय भावना अधिक प्रबल दिखाई देती है। 'अकेली राह' कहानी की गौरी की माँ पुराने खयालों की है। जाति–पाति तथा छुआछूत मानने वाली स्त्री है। कहानी की साबिरा रहमान से कहती है, "पहली बार मैं गई तो उन्हें मेरे बारे में पता न था। चारपाई पर बैठाया। जब मैं गौरी को वापस पहुँचाने गई तो वह चारपाई भीगी हुई धूप में सुख रही थी।"[८] गौरी और रहमान के प्रेमसम्बन्धों की भनक माँ को जब लगती है तो वह बेहद उद्विग्न हो जाती है। वह सोचती है, "लड़का भी अगर खत्री, बनिया या ब्राह्मण होता तो कोई बात न थी, पर यह तो एकदम अधर्म है।"[९] इसी भय से माँ गौरी की अन्य स्थान पर शादी करने का विचार करती है, किन्तु गौरी विवाह से स्पष्ट इन्कार कर देती है। तब माँ का जातीय अभिमान जागृत होता है और स्वर में सख्ती लाकर कहती है, "अगर तुमने कुछ ऐसा वैसा किया तो मैं जहर खा लूँगी। इधर तुम्हारी डोली उठेगी, उधर मेरी लाश।"[१०]

आर्थिक स्थिति के कारण ग्रामीण मध्यवर्गीय व्यक्ति विभिन्न समस्याओं से संघर्ष कर रहा है। आर्थिक अभाव के कारण पिता के सम्मुख लड़की के विवाह का प्रश्न बना है। दहेज जुटा न पाने के कारण विवाह टूट रहे हैं। इच्छा होते हुए भी मध्यवर्गीय युवक उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहे है। निम्न मध्यवर्गीय परिवार की लड़की यदि साधारण रूप रंग वाली हो तो उसके विवाह के लिए माँ–बाप को अनेक परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। अर्थ के अभाव में विवाहित एवं बीमार तथा रोगी पुरुष से शादी करने के लिए विवश होना पड़ता है। 'मेनका : रंभा : उर्वशी' कहानी की कुसुमी की बुआ इसी प्रकार की आर्थिक परेशानियों के कारण इच्छा न होते हुए भी कुसुमी का विवाह तपेदिक की बीमारी से ग्रस्त पुरुष के साथ तय करती है। परशु की चाची जब उसे रोकती है तो वह कहती है, "क्या मैं नहीं चाहती कि लड़की अच्छे घर जाए? पर मजबूरी आदमी की कमर तोड़ देती है।"[११] 'कच्चे धागे' कहानी में धनाभाव के

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

कारण ग्रामीण मध्यवर्गीय रूपवान, गुणवान, कुलीन एवं सुशील लड़की अच्छे घर की बहू नहीं बन पाती। जब घर में दो–दो साधारण रूप रंग की बेटियाँ हों, तब निम्न मध्यवर्गीय पिता की अवस्था दयनीय होती है। बेटी की शादी के लिए दहेज जुटाने हेतु बेटे की शादी का एकमात्र उपाय शेष रहता है। 'फिर वसंत आया' कहानी के विनायक के पिता की अवस्था कुछ ऐसी ही है। रिटायर होने के पश्चात् वे चाहते हैं कि पहले विनायक की शादी हो जाए, जिससे बेटियों की शादी में मदद हो सके। विनायक के कथन में परिवार की आर्थिक स्थिति का अनुमान होता है, "मेरी माँ मर चुकी है पिता मामूली आदमी हैं। अब रिटायर हो चुके हैं, बाबा की ज़मीन है, उसी की देखभाल करते हैं, दो बहनें हैं। मेरे लाख ज़ोर देने पर भी उन्हें पढ़ाया–लिखाया नहीं गया। खूबसूरत भी नहीं हैं। न हमारे पास बहुत रुपया ही है इसलिए शादी रुकी है। अब अगर मैं पिताजी की इच्छा के बावजूद शादी कर लेता हूँ, तो बहनें बिल्कुल निराधार रह जाती हैं।"[१२] अर्थाभाव के कारण विनायक के पिता मीना की शादी ऐसी जगह तय करते हैं, जो लड़का शादीशुदा है, जिसका चरित्र भी अच्छा नहीं है। विनायक को लगता है, "यह तो सरासर उसका गला काटना है।"[१३] मीना को भी विनायक से बहुत उम्मीदें थीं। गीता भाभी के सम्मुख मीना अपने पिता की इच्छा प्रकट करती है, "यहाँ एक बिजनसमैन है। उनकी लड़की पिताजी को बहुत पसंद है। पिताजी ने सोचा था कि अगर भैया राजी हो गए, तो उनकी भी सगाई कर देंगे।"[१४] पिता की आर्थिक मजबूरी के सम्मुख विनायक छाया के प्रति प्रेमसम्बन्धों की कुर्बानी देकर जहाँ पिता की इच्छा है वहीं शादी करने के लिए विवश हो जाता है।

उषा प्रियंवदा के कथा–साहित्य में चित्रित ग्रामीण मध्यवर्ग के सामाजिक पक्ष के अनुशीलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मध्यवर्ग एक ओर परंपरागत रूढ़ि–परंपराओं को पीढ़ी–दर–पीढ़ी संप्रेक्षित कर रहा है, तो दूसरी ओर एक शिक्षित पढ़ा–लिखा तबका प्रचलित रूढ़ि–परंपराओं की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न निर्माण कर रहा है। वैसे देखा जाए तो शहरी मध्यवर्ग एवं ग्रामीण मध्यवर्ग के सामाजिक जीवन में विविधता पाई जाती है। विवाह संस्था में एक ओर मध्यवर्गीय माता–पिता बच्चों की पसंद–ना–पसंद की चिंता न करते हुए अपने बच्चों के भविष्य का निर्णय ले रहे हैं, तो कतिपय मध्यवर्ग के युवक–युवतियाँ अपने जीवनसाथी का चुनाव स्वयं कर रहे हैं। अतः इस निर्णय में जाति, संपद्राय एवं धर्म का महत्व नहीं है। शिक्षा के प्रचार व प्रसार ने जातीयता के बंधनों को शिथिल अवश्य किया है, परन्तु पूर्णरूप से अभी भी जातीयता के बीज नष्ट नहीं हो पाए हैं। संयुक्त परिवार टूटकर विभक्त एवं एकल परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं। आर्थिक अभाव में विभिन्न समास्याओं से ग्रामीण मध्यवर्ग को गुज़रना पड़ता है।

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR * Dist.Nanded *

संदर्भ :

१. भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र तथा आलोचना, डॉ. अमर प्रसाद जायसवाल, पृ.६
२. संपूर्ण कहानियाँ – मेनका, रंभा, उर्वशी, उषा प्रियंवदा, पृ.३८
३. वही, पृ.३८
४. वही, पृ.३८
५. वही, पृ.३१
६. संपूर्ण कहानियाँ – फिर वसंत आया, उषा प्रियंवदा, पृ.१२७
७. संपूर्ण कहानियाँ – अकेली राह, उषा प्रियंवदा, पृ.१०७
८. वही, पृ.१०६–१०७
९. वही, पृ.११४
१०. वही, पृ.११२
११. संपूर्ण कहानियाँ, उषा प्रियंवदा, पृ.४०
१२. वही, पृ.१२७
१३. वही, पृ.१२९
१४. वही, पृ.१३०

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded